Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

पूँजीवाद का तात्पर्य :-

चौदहवीं शताब्दी के आरम्भ से ही यूरोप के आंतरिक एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विकास हो रहा था। मौंगोलिक खोजों के फलस्वरूप आंतरिक तथा स्थलमार्ग के व्यापार में आश्चर्यजनक विकास हुआ।
यूरोप के व्यापारियों को अपने व्यापार से आशा से अधिक लाभ हुआ। इसके फलस्वरूप काफी पूँजी एकत्र होने लगी। इस पूँजी को उन्होंने पुनः व्यापार में लगाया। इस तरह 15 वीं शताब्दी के अंत में यूरोप में एक नई व्यवस्था का जन्म हुआ, जिसे 'पूँजीवाद' कहते हैं।
इस व्यवस्था में पूँजीपति अपनी पूँजी को जमा करके नहीं रखते और न सम्पूर्ण लाभ को अपने ऊपर खर्च ही करते हैं, उनका एक मात्र उद्देश्य इस पूँजी से अधिकाधिक लाभ कमाना होता है। पूँजीपति वैसे ही वस्तुओं का व्यापार करते थे, जिनकी मांग बाजारों में अधिक होती थी। वे वस्तुओं का उत्पादन भी बाजार की मांगों के अनुसार ही करते थे। वे उन वस्तुओं को बाजार में बेचकर ज्यादा से ज्यादा लाभ कमाते थे।
आरम्भ में उन्हें यह लाभ व्यापार से होनेवाले मुनाफे से ही होता था। इसलिए 15 वी शताब्दी में जिस पूँजीवाद का विकास हुआ, उसे 'व्यापारिक पूँजीवाद' कहा गया।

पूँजीवाद का उदय :-

मध्यकाल में सामंतवादी व्यवस्था के अंतर्गत स्थानीय आवश्यकताओं के लिए ही वस्तुओं का उत्पादन किया जाता था। उस समय वस्तुओं के उत्पादन का उद्देश्य लाभ कमाना नहीं था। वस्तुओं की खरीद-बिक्री मेलों में की जाती थी। पहले कारीगर अपने सामान्य औजारों से अपने घरों में काम करते थे। अपना सामान तैयार करने के लिए वे कच्चा माल व्यापारियों से प्राप्त करते थे। कच्चे माल से तैयार किया हुआ माल वे फिर व्यापारियों या अन्य लोगों के हाथ बेचते थे। वे किसी के अधीन काम नहीं करते थे। इस उत्पादन प्रणाली को 'घरेलू प्रणाली' कहा जाता था।
बाद में देश में तथा विदेश में व्यापार के विकास के कारण बाजारों के स्वरूप में परिवर्तन हो गया।

Scanned with CamScanner

पूँजीवादी प्रणाली में हाटों और मेलों की जगह बड़े-बड़े बाजारों की आवश्यकता होती है। वस्तुओं के उत्पादन का उद्देश्य लाभ कमाना होता है। व्यापार का विस्तार होने से विभिन्न वस्तुओं की मांग बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में व्यापारी वर्ग अधिक से अधिक उत्पादन करने के प्रयास में लग जाता है। अधिक उत्पादन करने के लिए उत्पादन के साधनों में सुधार की आवश्यकता होती है। अतः पूँजीवाद के विकास के साथ अधिक उत्पादन के लिए उत्पादन के तरीके में भी परिवर्तन होना शुरू हुआ।

आरम्भ में पूँजीपति कारीगरों को वस्तुओं के निर्माण के लिए कच्चा माल देते थे। कारीगर पूँजीपतियों के निर्देशानुसार ही वस्तुओं का निर्माण करते थे। तैयार की हुई वस्तुओं को बेचकर प्राप्त लाभ पूँजीपतियों को मिलता था। कारीगर केवल अपने परिश्रम की मजदूरी ही पाते थे। परिस्थितिवश धीरे-धीरे कारखाना प्रणाली का जन्म हुआ। इस प्रणाली के अन्तर्गत पूँजीपति अधिक से अधिक कारीगरों को रखने और बाजार की मांग के अनुरूप वस्तुओं का उत्पादन कराने लगे।

उत्पादन के चार प्रमुख साधन हैं — भूमि, श्रम, पूँजी और व्यवस्था।

कारखाना प्रणाली में उत्पादन के सभी साधनों, कारखानों, मशीनें तथा उत्पादित वस्तुओं के विक्रय पर पूँजीपतियों का वास्तविक स्वामित्व होता है।

उत्पादन करनेवाला दूसरा होता है और उत्पादन का मालिक अर्थात् उससे लाभ का हकदार पूँजीपति होता है। कारीगर वस्तुओं का उत्पादन करते थे और इसके बदले मालिक से वेतन पाते थे। अब पूँजीपतियों ने अपने लाभ को अन्य उद्योगों में लगाना शुरू किया। वे कारखानों में तैयार किए गए सामानों को बाजार में बेचने की व्यवस्था करने लगे। इससे उन्हें अधिकाधिक लाभ होने लगा। इस तरह व्यापारिक पूँजीवादी के स्थान पर औद्योगिक पूँजीवाद का जन्म हुआ।

पूँजीवादी व्यवस्था के परिणाम :—

(क) पूँजीवादी व्यवस्था में दो नए वर्गों का उदय हुआ।

(i) पूँजीपति वर्ग

(ii) श्रमिक वर्ग

Scanned with CamScanner

पूँजीपति वर्ग का ही उत्पादन पर पूरा नियंत्रण हो गया। श्रमिक काम करते थे और इसके लिए उन्हें वेतन मिलता था।
मुनाफा तो केवल पूँजीपतियों एंव उनके दलालों का होता था।

(ख) पूँजीवादी व्यवस्था का प्रभाव कृषि पर विशेष रूप से पड़ा। छोटे-छोटे किसान भूमिहीन हो गए। उनकी जमीन पर कल-कारखानें स्थापित किए जाने लगे। वे शहरों में आकर कारखानों में काम करने लगे।

(ग) पहले की सामाजिक व्यवस्था में जो स्थान राजा या सामंत का था वही स्थान अब पूँजीपति वर्ग का हो गया।

(घ) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था मे अधिक से अधिक उत्पादन करने की होड़ थी। परिणामस्वरूप पूँजीवादी देशों में कृषि, उद्योग, तथा वाणिज्य-व्यापार का प्रर्याप्त विकास हुआ। देश में बड़े-बड़े कारखानें खोले गए। नगरों का विकास हुआ। लोगों के रहन-सहन का स्तर ऊँचा हुआ। राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई तथा पूँजीपति वर्ग अधिक सम्पन्न बनता गया। दूसरी ओर बेकारी की समस्या बढी।

(ङ) पूँजीपति वर्ग के लोग गरीब, मजदूरों व कृषकों का अधिक शोषण करने लगे।

(च) पूँजीवादी व्यवस्था से ही साम्राज्यवाद का जन्म हुआ। यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा एशिया, अमेरिका तथा अफ्रीका के महादेशों में उपनिवेश स्थापित किए गए।

Scanned with CamScanner